भीख को भारत में एक 'वृत्ति' (आजीविका -पद्धति) का दर्जा प्राप्त है । यह वृत्ति -भाव हमारे मानस में कुछ इस तरह व्यवस्थित है कि किसी भिक्षुक की स्थिति हमें कचोटती नहीं है । हम उस अमानवीय परिघटना में जाना ही नहीं चाहते जो किसी व्यक्ति को सामाजिकता की परिधि से बाहर खदेड़ देती है। जहां उसके समस्त नागरिक अधिकार निरस्त हो जाते हैं और वह अत्यंत निचले दर्जे के परजीवी में बदल जाता है । भीख पाने कि किसी भी बहाने को गौरवान्वित करना सिवाय एक छल के कुछ नहीं है। और अगर एक बच्चा या बच्ची भीख मांगती है तो इसे एक हादसा नहीं तो और क्या कहेंगे ?

हादसा

❑ हेतु भारद्वाज

सुबह का भुकभुका
अप-डाउन करने वाले लोग
आ बैठे रेल के डिब्बे में

खेलने लगे सीप चुपचाप
तभी फटे जम्फर पर एक और फटा जम्फर पहने
बायें हाथ की अंगुलियों में दो ठीकरे दबाए
दायें हाथ के ठीकरे से उन्हें बजाने लगी -
खट-खटा खटा-खट, खट खटा-खट ....

गाने लगी बेहूदा तर्ज में
वन टू का फोर .... फोर टू का वन
माई नेम इज लखन ....
गाती रही ऐसे ही ....
उसे कितनी जल्दी बोध हो गया -
'जो दे उसका भी भला, जो न दे उसका भी भला ।'

कैसा वक्त है ?
आंगन में उतरती है धूप
किलकारियां भरते हैं बच्चे
स्कूलों को जाते हैं सजे-धजे बच्चे
माएं उन्हें सजाती हैं
फेस क्रीम पोतकर उनका रंग निखारती हैं मांए
उनके गलों में टाइयां बांधती है मांए
स्कूल को विदा करने से पहले उन्हें चूमती है मांए
स्कूल बस में बिठा उन्हें टा टा करती हैं मांए
कितने खूबसूरत लगते हैं सजे-धजे बच्चे
एक सी पोशाक में ।

फटे जम्फर पर फटा जम्फर पहने गा रही लड़की
मांग रही है भीख सबका भला चाहते हुए
उसकी मां ने ही उसे सिखाया होगा ?
और लोग सीप खेल रहे हैं
उन्हें क्या मतलब कि उनके डिब्बे में एक हादसा हो रहा है
सुबह-सुबह
वे सब इस हादसे के अभ्यस्त जो हो चुके हैं । ◆